Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal
Impact Factor 5.3
ISSN No. 2456-1665

स्वतंत्रता पूर्व सामाजिक परिस्थितियों, मान्यताओं का दर्पण आत्मकथ्य साहित्य

डॉ. विनि विकास ढोमणे
हिंदी विभाग
जे. एम पटेल कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय,
भंडारा (महाराष्ट्र) ४४१९०४
vinidhomne25@gmail.com

सारांश

साहित्य समाज का दर्पण होने के कारण इसमें समाज में व्याप्त स्थितियों मान्यताओं व समस्याओं का उल्लेख होना स्वाभाविक है।आत्मकथ्य साहित्य जैसे आत्मकथा, संस्मरण, डायरी, रेखाचित्र आदि में शुरुवात से अंत तक सामाजिक,धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक तथा आर्थिक परिस्थितियों का चित्रण होता है। निःसंदेह आत्मकथात्मक शक्ति उसके सौंदर्यबोध व आत्मनिरीक्षण पर टिकी रहती है, जो एक महत्वपूर्ण आयाम है। आत्मकथ्य साहित्य में वर्णित महान व्यक्तित्व एवं कृतित्व आदमी के लिए दिशा बोध का काम करता है। वह अपने जीवन को आदर्शनिष्ट मूल्यों, विचारों को स्वीकार करता हुआ उस पथ पर अपने आप को ढालने का प्रयास करता है। इसलिए आत्मकथ्य साहित्य में सत्यता के अलावा अनुभूतिप्रामाणिकता, स्वभाविकता, वैयक्तिकता, यथार्थता, रोचकता, संगठिकता, तथ्यात्मक, आत्माभिव्यक्ति, कौतूहलपूर्ण आदि विशिष्टताओं का होना स्वाभाविक है। अर्थात व्यापक जीवन दर्शन, अनुभूति की गहनता, सार्वभौमिक दृष्टि, सुरुचिपूर्ण सौंदर्य चेतना, उद्देश्य की महानता, मानवी विकास की आस्था और प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति समर्थन इससे निश्चय ही साहित्य शाश्वत मूल्य रखता है। आज के युग में स्वायत्तता के उद्देश्य को उसकी सत्यता की ईमानदार को, उसके अनुभव की प्रामाणिकता को गहराई को विस्तार से जानने पूछने और उसका मूल्यांकन करने का एक मात्र साधन आत्मकथ्य साहित्य हैं। निश्चय ही आत्मकथ्य साहित्य में वर्णित सभी स्थितियाँ और मान्यतायें दिशा बोध का कार्य करेंगे।

शोध पत्र

आत्मकथ्य साहित्य में वर्णित महान व्यक्तित्व एवं कृतित्व आदमी के लिए दिशा बोध का काम करता है। वह अपने जीवन को आदर्शनिष्ट मूल्यों, विचारों को स्वीकार करता हुआ उस पथ पर अपने आप को ढालने का प्रयास करता है। इसलिए आत्मकथ्य साहित्य में सत्यता के अलावा अनुभूतिप्रामाणिकता, स्वभाविकता, वैयक्तिकता, यथार्थता, रोचकता, संगठिकता, तथ्यात्मक, आत्माभिव्यक्ति, कौतूहलपूर्ण आदि विशिष्टताओं का होना स्वाभाविक है। अर्थात व्यापक जीवन दर्शन, अनुभूति की गहनता, सार्वभौमिक दृष्टि, सुरुचिपूर्ण सौंदर्य चेतना, उद्देश की महानता, मानवी विकास की आस्था और प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति समर्थन इससे निश्चय ही साहित्य शाश्वत मूल्य रखता है। आज के युग में स्वायत्तता के उद्देश्य को उसकी सत्यता की

ईमानदार को, उसके अनुभव की प्रामाणिकता को गहराई को विस्तार से जानने पूछने और उसका मूल्यांकन करने का एक मात्र साधन आत्मकथ्य साहित्य हैं। आत्मकथ्य साहित्य जिसमे आत्मकथा, संस्मरण,डायरी, रेखाचित्र आदि की शुरुआत धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक परिस्थितियों का चित्रण किया है निःसंदेह आत्मकथात्मक शक्ति उसके सौंदर्यबोध व आत्मनिरीक्षण पर टिकी रहती है, जो एक महत्वपूर्ण आयाम है। आत्मकथ्य साहित्य की विभिन्न वैशिठ्य के कारण इस साहित्य के माध्यम से हिंदुस्तान की परिस्थितियाँ और मान्यताओं को आसानी से समझा जा सकता है। लेखक के व्यक्तित्व वैशिष्ट्य के आकलन से जीवन के सांगत तथ्य इस अवलोकन, शोध में आंशिक सहायता कर सकते हैं।

साहित्य समाज का दर्पण होने के कारण इसमें समाज में व्याप्त स्थितियों मान्यताओं व समस्याओं का उल्लेख होना स्वाभाविक है। सोलहवीं शताब्दी के प्रारंभ से जब भारत में मुसलमानों का साम्राज्य था लोगो ने सामाजिक जीवन का वर्णन किया। सम्राट बाबर के निम्न कथ्य से पूर्वकाल आदिकाल की मान्यतायें, परिस्थितियाँ, आर्थिक व मानसिक स्थिति का स्पष्ट रुप से पता चलता है। उन्होंने लिखा था 'लोक सुन्दर और उदार नहीं है, उन्हें मैत्री पूर्ण संगति की, एक दूसरे से दिल खोलकर मिलने की और धनिष्ठ वार्तालाप गुणों के आकर्षण का कुछ पता नहीं है। उसमें कोई प्रतिभा नहीं है। बुद्धि नहीं है। व्यवहार में नम्रता नहीं है। उनके पास न अच्छे घोड़े हैं, ना अच्छा मास हैं, ना अच्छे फल है, ना बर्फ है, न ठंडा पानी है। बाजारों में अच्छा खाना है न रोटी है, ना स्नानगृह है। न विद्यालय हैं, ना बत्ती है, ना मसाले हैं, यहाँ तक मोमबत्ती तक नहीं, बत्ती और मशाल की जगह उनके पास एक गंदे लोगों का गिरोह है जिसे वह देवता कहते है। उनके किसान और नीच वर्ग के लोग नंगे घूमते हैं। वे कपड़े का एक टुकड़ा लपेटते हैं, जिन्हें लंगोटी कहते हैं। उनकी स्त्रियाँ भी..... पहनती हैं।(१) संक्षेप में कहा जा सकता है कि उस समय मुसलमानों को कहीं सिर छुपाने की जगह न थी। हिंदू और मुसलमान में कोई भी बात एक जैसी न थी। हिन्दू और मुसलमानों के बीच बड़ी ईर्ष्या और घृणा थी। हिन्दू लोग अज्ञानी पिछड़े हुए और अंधविश्वासों में डूबे हुए थे। ये पूर्वाग्रहों में विश्वास करते थी। निरर्थक समारोह में विफल धनराशि व्यय करते थे। हिंदुत्व और इस्लाम दोनों की मूल भावना औपचारिकताओं और बाहरी दिखावे से प्रच्छन्न थी। अज्ञान और अंधविश्वास की गर्त में डूबे हुए लोग मानसिक रूप से गुलाम बन गये थे। इसी प्रकार हमारे देश के यथार्थवादी महान लेखक प्रेमचंद जी ने लिखा 'इन रुढियों ने, इन बंधनों ने, इन असत्य बाधाओं ने ब्रम्हाण्ड कि व्यापक चेतना में जो दर्बे से बना दिए है उसमें बंद होकर हम अपनी स्वच्छंदता खो बैठे हैं।'(२)

उन दिनों नारियों का सामाजिक दर्जा निःसंदेह बहुत गिरा हुआ था। बच्ची का जन्म अशुभ समझा जाता था। उन्हें पुरुषों की जूती समझा जाता था। देश की कुछ भागों में स्त्रियों का व्यापार ख़ूब चलता था। अमीर लोगों में बहुविवाह की प्रथा तथा सती प्रथा भी चालू थी। इस संबंध में अनेक उदाहरण हमें आत्मकथ्य साहित्य में मिलते हैं। प्रेमचंद जी ने इस संबंध में कोई भी तथ्य छोड़ा नहीं। उनके शब्दों में 'एक नजर उस ग़रीब औरत जात पर भी डालो ! क्या मट्टी पलीद

की है बेचारियों की। कहने को कह दिया यहाँ नारियों की पूजा होती है। यहाँ देवता वास करते हैं। उनकी सच्ची स्थिति दासी के अलावा और कुछ नहीं है। अपने पैरों पर खड़े होने का उसका अधिकार नहीं है। शिक्षा का भी अधिकार उसे नहीं है। शूद्र और नारी के कान में भी वेद का स्वर पड़ने से पाप लगता है। उसका उपयोग इतना ही है कि वह एक भोग्या हैं, एक रमणी है और एक खेत है, जिसके संतान से पुरुष की संपत्ति के उतराधिकारी की प्राप्ति होती है। उसकी अपनी कोई इच्छा को समाज मान्यता देने के लिए तैयार नहीं है। इसलिए तो कन्या और गौ का स्थान एक ही, चाहे जिसके साथ बाँध दो।'(३) कमला नेहरु ने एक प्रश्न किया था कि 'स्त्री का शरीर पुरुष के समान शक्तिशाली नहीं फिर भी चक्की पीसना स्त्री की ही नियति क्यों है, पुरुषों की क्यों नहीं।' (४)

हिन्दुओं और मुसलमान अलग अलग संप्रदायों में विभक्त थे। ईर्ष्या, अहंकार और मिथ्याभिमान से व्यर्थ ही एक दूसरे से लड़ते रहते थे। संसार धन लोलुपता में डूबा था। मुल्लाह और ब्राम्हण एक दूसरे को नष्ट करने के लिए आपस में संघर्षरत थे। हिन्दुओं को उस समय के विश्व की मुसीबतों और कष्टों से कोई वास्ता न था। मूर्तिपूजा का बहुत प्रचलन था। हजारों देवी -देवता पैदा हो गई थे। हिन्दुओं का इतना नैतिक पतन हो चुका था कि मुस्लिम शासकों द्वारा उनके साथ जो अमानवीय व्यवहार किया जा रहा था उससे भी उनका विवेक जाग्रत नहीं हुआ। उन्होंने कभी उनका विरोध करने का विचार तक नहीं किया। मुस्लिमों की हालत हिन्दुओं से बेहतर न थी वे अत्याधिक असहिष्णु और धर्मान्ध थे। जमीदार प्रथा, जाति प्रथा, अंधश्रद्धा का सर्वत्र बोलबाला था। इस्लाम के उदय से, उसका भारत में प्रचार से हिंदुत्व को नई- नई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। उसका अस्तित्व खतरे में था। ऐसे समय धार्मिक विचारकों के सामने अब इस्लाम की भीषण प्रहार से अपने सामाजिक ढांचे के मर्म स्थान और असुरक्षित स्थान का बचाव करने के लिए उन्होंने लोगों को प्राचीन धार्मिक ग्रंथ पढ़ाने तथा प्राचीन हिन्दू देवी देवताओं के यश से और उनकी शक्ति से अवगत करने का सोचा। इस आंदोलन में शंकराचार्य, रामानुज, कबीर, रामानंद, चैतन्य आदि ने परिस्थिति की गंभीरता को महसूस करते हुए उन्होंने धर्म में नई जीवन का संचार, मनुष्यमात्र की भी समानता और सबके लिए शांति का संदेश लोगों को प्रेम द्वारा दिया। सभी सुधारकों ने एक जाति, एक धर्म, समानता व प्रेम का संदेश लोगो तक पहुंचाया। इन संदेशों का असर लोगों को होने लगा था। जब लोग प्रेम के महत्व को समझने लगे थे तभी हुआ ब्रिटिशों का आगमन।

निःसंदेह , भारत में तब सामाजिक स्थिति की दृष्टि से लोग पुराने संस्कारों रीति -रिवाज़ों, परंपराओं और रुढ़ियों से मुक्ति ले रहा था, वहीं दूसरी ओर अंग्रेज़ी साम्राज्य जानबूझकर देश को सामाजिक दृष्टि से पिछड़ा करना चाहता था और अपनी अंग्रेजी शिक्षा व संस्कृति का चारों ओर प्रचार कर रहा था। भारतीयों को जहाँ इससे कुछ नुक़सान हुए वहीं कुछ फायदे भी हुए। लोगों में राष्ट्रीय जागरण की भावना जागी, एवं उनमें अपनी व्यक्तित्व की पहचान के संधर्ष में असंतोष की भावना हुई। नेहरुजी ने अंग्रेजो का हिन्दुओं पर हुए प्रभाव के संबंध में लिखा कि 'भारत में

अंग्रेजों के अधिपत्य से हमें **शांति** मिली है। हिन्दुस्तान को मुग़ल साम्राज्य के अंग होने के पश्चात उनसे होने वाले वाली कष्टों और संकटों की बाद शांति की ज़रूरत भी थी। इसमें शक नहीं शान्ति एक बड़ी मूल्यवान वस्तु है जो किसी भी तरह की उन्नति के लिए **आवश्यक** है। लेकिन उसकी मूल्य की भी एक सीमा होनी चाहिए।(५) मेरा विश्वास है कि हिंदुस्तान का विज्ञानशील और उद्योगशील यूरोप के संपर्क **में** आना अच्छा ही हुआ।(६) उन्होंने हमें **राजनीतिक** एकता दी थी जो एक वांछनीय वस्तु थी।'(७)

अठारहवीं सदी में **हिंदुस्तान** में बड़े भारी परिवर्तन हुए। लोगों के जीवन पर अंग्रेज़ों की प्रभाव के साथ यहाँ नदियाँ, रेले, नहरें,कारखाना, स्कूल और कॉलेज बड़े बड़े दफ्तर आदि भी बन गये थे। 'फिर भी इन **परिवर्तनों** के बावजूद आज भी हिन्दुस्तान की **क्या** अवस्था है। वह एक गुलाम देश हैं। जिसकी **शक्ति** पिंजरे में बंद कर दी गई है। जो खुलकर साँस लेने की भी हिम्मत नहीं कर सकती। जो बहुत दूर रहने वाले विदेशियों द्वारा शासित है। जिसके निवासी एक नितांत निर्धन थोड़ी उम्र में मरने वाले और रोगो पर तथा महामारी से अपने आपको बचाने में असमर्थ थे। यहाँ अशिक्षा चारों ओर फैली हुई है।' (८) 'आह! पीठ पर ले किसी सदियों का भारी भार झुका हुआ खड़ा अपने हल पर, धरती को रहा निहार युग- का सूनापन उसके ही मुँह पर देख सिर पर उसके और बोझ बन गया संसार।' (९)

हिंदुस्तान की सारी **तकलीफों** का दोष हम विदेशियों को नहीं दे सकते क्योंकि हिन्दुओं में हजारों अच्छाई के साथ- साथ बुराइयाँ भी है। जिसमें रूढ़िवादी **परम्पराएँ** मान्यताएं हैं। जिससे हमारे देश में आम जनता का जीवन समस्याओं से भरा पड़ा है। **मान्यताओं**, परम्पराओं के हजारों उदहारण हमें आत्मकथ्य **साहित्य** में मिलते है। क्योंकि इससे कोई नहीं बच सका चाहे फिर वह शिक्षित हो या अशिक्षित, **उच्च** हो या निम्न हो, छोटा हो या बड़ा हो। **किसी** ने मान्यताओं को माना है त किसी ने किया **विरोध**। फिर भी जब यज्ञोपवीत पहराया जाता था और वेदारम्भ की विधि भी हो चुकती तो **ब्रह्मचारी** कोपीन दंड धारण कर, भिक्षा ले काशी पढ़ने के लिए जाने की तैयारी करता।'(१०) तंत्र मंत्र पर लोगों का विश्वास बना हुआ था खुशवंत **सिंह** ने इस संबंध में अनेक उदाहरण दिये। 'सन १९६२ के अष्ट योग के समय हमारे ज्योतिषी ने **भविष्यवाणी** की थी कि 3 फरवरी की शाम साढ़े पाँच बजे दुनिया का अंत हो जायेगा। तमाम रेले, हवाई जहाज, बसें, खाली चल रही थी। लोग अपने **परिवारों** के साथ घर में घुसे बैठे थे। देवताओं को तुष्ट करने के लिए हवन में टनों घी जलाया गया। हुआ कुछ भी नहीं। उन मान्यताओं से **इंदिरागांधी** व अन्य भी अछूते न थे।' (११) 'श्रीमती गांधी दुष्ट शक्तियां को हराने के लिए अपने घर में तांत्रिक क्रियायें करवाती थी। गृह मंत्री बूटा **सिंह** और लोक सभा के अध्यक्ष बलराम जाखड़ ही राजीव गांधी को देवरहा बाबा का आशीर्वाद के लिए राजी किया था। वे बाबा नंगे एक पेड़ पर बैठे रहते थे। कुछ हफ्तों बाद ही राजीव गांधी का प्रधानमंत्री पद छीन गया और बूटा सिंह जाखड़ दोनों ही संसद का चुनाव हार गए'। (१२)

बहुत से मुख्यमंत्री तंत्र साधना करते है । तमिलनाडु की जयललिता हर रोज़ अपनी ज्योतिषी की सलाह लेती हैं। ज्यादातर हिन्दुस्तान राजनेता जिसमें प्रधानमंत्री नरसिंहराव भी शामिल है राहु काल अशुभ समय की धारणा में विश्वास करते है।(१३) भारतीयों की मानसिकताके आधार पर मुंशी जी ने मान्यताओं के नाम पर शादी ब्याह के मौके पर गालियों की सम्बंध में लिखा 'हम बात बात पर गालियां बकते हैं और हमारे गालियाँ सारी दुनिया की गालियों से निराली, घृणित और गंदी होती है। बारात दरवाज़े पर आयी और गालियों से उसका स्वागत किया गया। ज्यों ही खाने का वक़्त आया कि चारों तरफ़ से गालियों की बौछार होने लगी और गालियाँ ऐसी वैसी नहीं पंचमेल के शैतान सुने तो जहन्नुम से निकल भागे। लोग सपड़- सपड़ भात खा रहे हैं। ढ़ोल मंजीरे बज रहे है। वाह वाह मची है और गालीयाँ गाई जा रही है।' (१४)

विष्णु प्रभाकर ने अपने बचपन के एक किस्से का उल्लेख करते हुए उस समय की मान्यताओं के संबंध में लिखा 'माँ के गर्भ से बाहर आते समय जब हम सिर के बल नहीं पैरों के बल प्रगट हुए थे। उन दिनों यह विश्वास बहुत प्रबल था जिस व्यक्ति की कमर में चनका आ गया हो तो वह..... बच्चे के द्वारा कमर में लात मारने पर वह दूर हो जाता है। न जाने कितनी बार, कितने लोगो की कमर में लात मारी होगी हम दोनों भाइयों ने।'(१५) हरिवंश राय बच्चन ने होली की एक मान्यता के बारे में लिखा 'निम्न वर्ग की बुंदेलखंडी औरतें कमर में कछोरा बाँध बांस ले छोटी छोटी टोलियो में निकलती है और जहाँ भी उच्च वर्ग के मर्दों को देखती है उन पर टूट पड़ती है यह कहते हुए की मार बाबूजी का आज झुंझा है..... और बाबूजी मार खाने के लिए बख्शीस देते हैं।'(१६)

१५ जनवरी १९३४ को सवा दो बजे जबरदस्त भूचाल आया प्रकृति के इस तांडव को अंधविश्वासी देवी कोप कहते हैं और वैसा ही उसका उपचार करते है। मुंशीजी ने इन मान्यताओं को इस तरह बताया -'साधु कहते है लोग साधु सेवा भूल रहे है इसलिए देवी कोप आया है।' 'वर्णाश्रम संघ यह कहता है कि मंदिरों को हरिजनों के लिए खुलवाने पर देवी कोप आया है।' 'पंडे लोग भी फरमाते है देवताओं में लोगों की श्रद्धा कम हो गई।'(१७) इस प्रकार की स्वार्थियों की युक्तियाँ ही लोगों की मान्यताएं बन जाती है।

महात्मा गांधी ने हरिद्वार की धार्मिक पाखंड का बयान करते हुए लिखा 'इस भ्रमण में मैंने लोगो की धर्म भाव की अपेक्षा उनकी मूढ़ता, अधीरता, पाखंड और अव्यवस्थिता अधिक देखी।' 'यहाँ मैंने पाँच पाव वाली गाय देखी। यह पाँच पैरों वाली गाय तो दुष्ट और लोभी लोगों का शिकार थी। बलिदान थी। जीते बछड़े का पैर काटकर गाय के कंधे का चमड़ा चीरकर उसमें चिपका दिया गया था। कौन हिंदू ऐसा है जो उस पाँच पाव वाली गाय के दर्शन लिए उत्सुक ना हो? इसके लिए वह जितना भी दाम दे उतना ही कम समझा जाता था।'(१८) इस प्रकार की सड़ी गली मान्यताओं के प्रति साहित्यकारों एवं चिंतकों ने निंदा कर विरोध प्रदर्शन किया। अब्दुल कलाम आज़ाद ने अपने जीवन में भरे मन से अपने जीवन में घिरे संकट संघर्ष , मान्यताओं के प्रति विद्रोह प्रकट किया-'मेरा जनम ऐसे परिवार में हुआ था जिसकी जड़ें धार्मिक परंपराओं में गहराई तक फैली हुई

थी। परंपरागत जीवन की **सारी** रुढ़ियों वहाँ बिना संदेह के शिराधार्य की जाती थी। जो मौजूदा रीति -रिवाज और मान्यताएं थी। उसमें मेरे मन का मेल नहीं बैठता था। मेरा मन विद्रोह की नयी भावना से ओतप्रोत था'। (१९) डॉक्टर अम्बेडकर ने धर्म भाव के संबंध में अपने विचार प्रगट करते हुए कहा कि '**धर्मग्रंथों** तो स्वयं ही पूर्वापर विरोधी हैं। वेद, **ब्राम्हण**, सूत्र और स्मृतियाँ परस्पर एक मत नहीं है। पर **आचार्यों** ने पूर्व आचार्यो कि आज्ञा का **उल्लंघन** किया है, सो मैं आज अपने पूर्व आचार्यों का **उल्लंघन** करता हूँ।'(२०)

गुलामी पाखंड की **पुष्टि** करता है। जिसके दिमाग गुलाम है, वे उस अच्छे बुरे कैसे भी काम हो बिना देखे चापलूसी के साथ करने में विवश है। जिससे हुए लाभ या हानि को वे न समझते है, न समझना चाहते है। जिसके कारण अनेक समस्यायें जन्म लेती है। **अब्दुल** कलाम आजाद ने आँखो देखा हाल बयान करते लिखा कि 'भारतीय राष्ट्र में जितनी असमानता, जाति प्रथा, धर्म पाखंड आदि की समस्यायें थी उतनी ही मुस्लिम साम्राज्य में भी थी। जिसके कारण यह देश अनेक वर्ण,जाति, भाषा, रहन- सहन, खान-पान और वेशभूषा से **विभाजित** है। और दूसरा महत्वपूर्ण कारण स्वतंत्रपूर्व डेढ़ सौ साल से भी अधिक की विदेशी **दास्ता** ने देश के विकास को अवरुद्ध कर दिया था और ऐसी अनेक महत्वपूर्ण समस्याओं को जन्म **दिया** था। इस काल में देश और जनता का भरपूर शोषण किया गया था । निःसंदेह इन परिस्थितियों ने जनता को भुखमरी और दुःख की गहराई में धकेल दिया था। देश को न तो गुलामी की **जंजीरों** में बाँध कर रखा गया और बेइज्जत किया गया, बल्कि उसका आर्थिक, सामाजिक, **सांस्कृतिक**, आध्यात्मिक अधःपतन भी हुआ है। (२१)

चतुरसेन शस्त्री अपनी आत्मकथा में उस काल की परिस्थिति का **विस्तृत** वर्णन करते हुए लिखा कि 'साम्राज्यवाद बहुत पुरानी संस्था थी पर इसमें दो भारी दोष थे। एक तो यह है कि इसमें बहुसंख्यक जनों की दासता स्वीकार करनी पड़ती है। सर्वसाधारण को इन राजाओं और उनके समर्थक ब्राम्हणों की दासता स्वीकार करके ही जीना पड़ा। इस स्थिति में दलित श्रमिक संघ स्वदेश या भविष्य की **उन्नति** के विषय में सर्वथा उदासीन बन गया। वे **भाग्य** को ही प्रबल मानने लगे। इस प्रकार जब उनमें **बुद्धि**- मालिन्य उत्पन्न हो गया था तभी **मुसलमानों** जैसे शत्रु इस घर में घुस आए और उनके **सम्मुख** ये हिन्दू विमूढ़ और निरुपाय बैठे रहे।'(२२) अब्दुल कलाम आजाद के अनुसार 'लड़ाई के दौरान आज भी उत्तरदायित्वहीन सत्ताधारियों के द्वारा शोषण कि यह प्रक्रिया और हिन्दुस्तान के **हितों** और विचारो की एकांत उपेक्षा नई **बुलंदियों** पर पहुँच गई है। हुकूमत इतनी निक्कमी है **कि** भीषण अकाल पड़े हैं। और जनता में **व्यापक** दुख समाया हुआ है। ये सभी समस्याएं ऐसी हैं जिनका जल्द से जल्द हल होना चाहिए। **उन्हें** हल करने का एक ही रास्ता है स्वाधीनता, **स्वतंत्रता**। राजनीतिक स्वतंत्रता का सार तत्व **आर्थिक** भी होना चाहिए सामाजिक भी।'(२३) संतराम ने अपनी आत्मकथा में सामाजिक स्थिति का वर्णन करते हुए कहा 'निस्संदेह राजनीतिक **स्वतंत्रता** की आवश्यकता इसलिए है कि मनुष्य सामाजिक स्वतंत्र हो। मनुष्य दूसरों की स्वतंत्रता **में** बाधक न होकर स्वेच्छानुसार खा पी सकें, पहन ओढ़ सके, चल फिर

सकें, मिल जुल और शादी ब्याह कर सके। सामाजिक जीवन को सुखमय बनाने के लिए एक प्रकार की सामाजिक स्वतंत्रता की आवश्यकता होती है।'(२४)

विभिन्न आत्मकथ्य साहित्य में सत्यता पर आधारित उल्लेखित स्वातंत्रपूर्व देश की परिस्थितियों से यह पता चलता है कि हिन्दुस्तान की समस्याओं में सबसे जरुरी और सबसे महत्वपूर्ण समस्या थी वह है गरीबी। इसका मुख्य कारण हमारे सामाजिक ढांचे में नुक्सवाद बूढी चरमराती व्यवस्था है। गरीबी की समस्या शुरु होती है बेरोजगारी, रचनात्मक कार्यों की कमी, उद्योग धंधों, भूमि परिवहन के साधनों व खनिज सम्पदा में कमी और इसका कारण है शिक्षा का अभाव। इसके अलावा हमारे देश में हर नागरिक के लिए हर नर- नारी के लिए बराबर के अधिकार व अवसरों की कमी, सभी संप्रदायों धार्मिक वर्गों में एकता का अभाव, जाति प्रथा विवरण तथा समाज की समस्या आदि समस्याएँ ही समस्या है।

स्वातंत्रपूर्व हमारे सामने हिन्दू मुस्लिम समस्या थी जो कि धर्म की समस्या थी और है जिसका निपटारा बँटवारे में हुआ। स्पष्ट है धर्म मनुष्य जाति का भयानक शत्रु हैं। ये लाखों पशुओं से ज़्यादा रक्त पिपासु है। और करोड़ों घृणित ठगों से ज्यादा ठग हैं। पशु पेट के गुलाम हैं, परंतु मनुष्य उसका गुलाम है। पशु पेट के लिए खूनी स्वभाव का हो गया है, परंतु मनुष्य धर्म पाखंड के लिए। इससे मनुष्यों के दिमागो को गुलाम बना रखा है। आज धर्म के कारण ही हमारे घरों में तीन करोड़ विधवाएँ चुपचाप आँसू पीकर जी रही है। इसी कारण पत्थरों की भद्दी और बेहद अश्लील मूर्तियाँ भी पूजनीय बनी हुई है। धर्म के कारण पत्थर को परमेश्वर कहने वाले पेशेवर गुनहगार पुजारी लाखों स्त्री पुरुषों से पैरों को पुजवाते हैं। धर्म ही के कारण निम्न जाति के लोग प्रातःकाल होते ही अपनी बहू बेटियों सहित औरों का मल मूत्र सिर पर ढोता है।

विवेकानंद ने समस्याओं पर प्रकाश डालते हुए कहा 'हमारे अधिकांश अंधविश्वास हमारी देह पर बहुत से गहरे धब्बे और घाव है। इनको काटकर और चीरफाड़ करके एकदम निकाल देना होगा, नष्ट कर देना होगा। इनके नष्ट होने से हमारा धर्म, हमारा राष्ट्रीय जीवन और हमारी आध्यात्मिकता नष्ट नहीं होगी। प्रत्येक धर्म का मूल तत्व सुरक्षित हो और जल्दी ही ये धब्बे मिटाये जायेंगे। उतने ही जल्दी ये मूल तत्व चमकेंगे।(२५) हिंदुस्तान के विभिन्न धर्म के सबंध में यह पता चलता है कि धर्म का लोगों ने भिन्न- भिन्न रीति से मनन किया और धर्म के नाम पर हत्या,, पाखंड, छल कपट, धर्माचार, जुवाँ ,चोरी, हरामखोरी, ठगी, धूर्तता, अपराध और पाप सभी प्रशंसा और क्षमा की दृष्टि से देखे गये। अंधविश्वास धर्म की जान है। अन्धविश्वासी कभी सत्यता की खोज नहीं कर सकता। अंधविश्वास ने ही मनुष्य को धर्म नीति से फुसलाकर रुढ़ियों का गुलाम बना दिया है । इस गुलामी के फलते -फूलते पेड़ को जड़ से उखाड़ने के लिए अनेक महापुरुष सामने आए। जिसमें स्वामी दयानंद सरस्वती, राजा राममोहन राय, विवेकानंद, गांधीजी आदि अनेक महापुरुषों ने प्रबल सुधारवाद का आयोजन किया। जिसमें आर्य समाज का सबसे अधिक प्रभाव लोगों पर पड़ा। बाकी सभी संप्रदायों पर एक नया खंड या संप्रदाय बन कर रह गया। धर्मांध होने के कारण आपस में जो लड़ाइयां हुई वह आम जनता के लिए तबाही, खून, खराबा,

लाचारी, बेकारी लेकर आयी, लेकिन फिर भी हम उलझे रहे इधर उधर **मंदिरों**, मंडलों ,मस्जिदों के चक्कर में। आत्मकथ्य **साहित्य** में उल्लेखित विभिन्न विद्वानों के **वक्तव्य** से स्पष्ट होता है कि स्वतंत्रता पूर्व समाज की **क्या** स्थिति, मान्यताएं और समस्या थी। **किस** तरह उन्होंने भी इन सभी अंधविश्वासों, **परिस्थितियों** से संघर्ष किया। किस तरह हमारे देश के महान चिंतकों के इन समस्यायों के हल निकलने **की** कोशिश कर लोगो के सामाजिक जीवन को बदलने की कोशिश की। चूंकि आत्मकथ्य **साहित्य** स्वयंभू होता है इसलिए इसमें वर्णित जीवन सत्यता को दर्शाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ -

१. गुरुनानक एक जीवनी -**सुरिंदर** सिंह जोहर, पृष्ठ ६
२. कलम का सिपाही - मुंशी **प्रेमचंद** , पृष्ठ ४९०
३. कलम का सिपाही - मुंशी **प्रेमचंद**, पृष्ठ ४३
४. कमला नेहरु - एक **आत्मीय** जीवन चरित्र- प्रमिला कल्हण पृष्ठ ५४
५.,६. मेरी कहानी - जवाहरलाल नेहरु, पृष्ठ ६०८
७ . मेरी कहानी - जवाहरलाल नेहरु, पृष्ठ ६०९
८. मेरी कहानी - जवाहरलाल नेहरु, पृष्ठ ६१०
९. मेरी कहानी - जवाहरलाल नेहरु, पृष्ठ ६१२
१०. कल्याण मार्ग का पथिक - स्वामी श्रद्धानन्द, पृष्ठ १४
११. सच, प्यार और थोड़ी सी शरारत - खुशवंत सिंह, पृष्ठ ३५०
१२. सच, प्यार और थोड़ी सी शरारत - खुशवंत सिंह, पृष्ठ ३५९
१३. कलम का सिपाही - **प्रेमचंद**, पृष्ठ ११२
१४. पंखहीन -विष्णु प्रभाकर, पृष्ठ ३०
१५. क्या भूलू क्या याद करु - हरिवंशराय बच्चन, पृष्ठ ७९
१६. कलम का सिपाही -**प्रेमचंद**, पृष्ठ ५१५
१७. सत्य के प्रयोग -महात्मा गाँधी, पृष्ठ ३९६
१८. आजादी की कहानी २ - **अब्दुल** कलाम आजाद, पृष्ठ ३
१९. मेरी आत्मकहानी -चतुरसेन शास्त्री, पृष्ठ ३३०
२०. आजादी की कहानी - **अब्दुल** कलाम आजाद, पृष्ठ १३७
२१. मेरी आत्मकहानी - चतुरसेन शास्त्री, पृष्ठ २८१
२२. आजादी की कहानी - **अब्दुल** कलम आजाद, पृष्ठ १३७
२३. हमारा समाज - संतराम, पृष्ठ ८
२४. राष्ट्र का नवनिर्माण - चतुरसेन शास्त्री, पृष्ठ ५७,५८
२५. भारत और उसकी **समस्यायें** - विवेकानंद, पृष्ठ २०